I.G.N.O.U. Based

NEERAJ®

E.C.O.-6

आर्थिक सिद्धांत

(Economic Theory)

By: *Mukesh Magon*, M.B.A., P.G.D.B., M.I.R.

Question Bank Cum Chapterwise Reference Book
***Including* Many Solved Question Papers**

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)
(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

Sales Office:
1507, Ist Floor, Nai Sarak, Delhi - 6
Ph.: 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501
E-mail: info@neerajignoubooks.com
Website: www.neerajignoubooks.com

MRP ₹ 240/-

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

Sales Office : **1507, 1st Floor, Nai Sarak, Delhi-110 006**
E-mail: **info@neerajignoubooks.com**
Website: **www.neerajignoubooks.com**

Reprint Edition with Updation of Sample Question Paper Only | *Typesetting by: Competent Computers* | *Printed at: Novelty Printer*

Notes:

1. *For the best & upto-date study & results, please prefer the recommended textbooks/study material only.*
2. *This book is just a Guide Book/Reference Book published by NEERAJ PUBLICATIONS based on the suggested syllabus by a particular Board /University.*
3. *The information and data etc. given in this Book are from the best of the data arranged by the Author, but for the complete and upto-date information and data etc. see the Govt. of India Publications/textbooks recommended by the Board/University.*
4. *Publisher is not responsible for any omission or error though every care has been taken while preparing, printing, composing and proof reading of the Book. As all the Composing, Printing, Publishing and Proof Reading etc. are done by Human only and chances of Human Error could not be denied. If any reader is not satisfied, then he is requested not to buy this book.*
5. *In case of any dispute whatsoever the maximum anybody can claim against NEERAJ PUBLICATIONS is just for the price of the Book.*
6. *If anyone finds any mistake or error in this Book, he is requested to inform the Publisher, so that the same could be rectified and he would be provided the rectified Book free of cost.*
7. *The number of questions in NEERAJ study materials are indicative of general scope and design of the question paper.*
8. *Question Paper and their answers given in this Book provide you just the approximate pattern of the actual paper and is prepared based on the memory only. However, the actual Question Paper might somewhat vary in its contents, distribution of marks and their level of difficulty.*
9. *Any type of ONLINE Sale/Resale of "NEERAJ BOOKS/NEERAJ IGNOU BOOKS" published by "NEERAJ PUBLICATIONS" on Websites, Web Portals, Online Shopping Sites, like Amazon, Flipkart, Ebay, Snapdeal, etc. is strictly not permitted without prior written permission from NEERAJ PUBLICATIONS. Any such online sale activity by an Individual, Company, Dealer, Bookseller, Book Trader or Distributor will be termed as ILLEGAL SALE of NEERAJ IGNOU BOOKS/NEERAJ BOOKS and will invite legal action against the offenders.*
10. *Subject to Delhi Jurisdiction only.*

© Reserved with the Publishers only.

Spl. Note: *This book or part thereof cannot be translated or reproduced in any form (except for review or criticism) without the written permission of the publishers.*

How to get Books by Post (V.P.P.)?

If you want to Buy NEERAJ IGNOU BOOKS by Post (V.P.P.), then please order your complete requirement at our Website ***www.neerajignoubooks.com****. You may also avail the 'Special Discount Offers' prevailing at that Particular Time (Time of Your Order).*
To have a look at the Details of the Course, Name of the Books, Printed Price & the Cover Pages (Titles) of our NEERAJ IGNOU BOOKS You may Visit/Surf our website ***www.neerajignoubooks.com.***
No Need To Pay In Advance, the Books Shall be Sent to you Through V.P.P. Post Parcel. All The Payment including the Price of the Books & the Postal Charges etc. are to be Paid to the Postman or to your Post Office at the time when You take the Delivery of the Books & they shall Pass the Value of the Goods to us by Charging some extra M.O. Charges.
We usually dispatch the books nearly within 4-5 days after we receive your order and it takes Nearly 5 days in the postal service to reach your Destination (In total it take atleast 10 days).

NEERAJ PUBLICATIONS

(Publishers of Educational Books)

(An ISO 9001 : 2008 Certified Company)

1507, 1st Floor, NAI SARAK, DELHI - 110006

Ph. 011-23260329, 45704411, 23244362, 23285501

E-mail: **info@neerajignoubooks.com** *Website:* **www.neerajignoubooks.com**

CONTENTS

आर्थिक सिद्धांत
(Economic Theory)

Question Bank – (Previous Year Solved Question Papers)

Question Paper—June, 2019 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2018 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2017 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2016 (Solved)	1
Question Paper—June, 2015 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2014 (Solved)	1-3
Question Paper—June, 2013 (Solved)	1
Question Paper—December, 2012 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2011 (Solved)	1-2
Question Paper—June, 2010 (Solved)	1-2

S.No. ***Chapterwise Reference Book*** *Page*

आर्थिक प्रणाली की मूल समस्याएँ तथा आधारभूत संकल्पनाएँ

1.	आर्थिक प्रणालियों की मूलभूत समस्याएँ	1
2.	आधारभूत संकल्पनाएँ	7
3.	आर्थिक प्रणालियाँ	15

उपभोक्ता व्यवहार तथा माँग का सिद्धांत

4.	सीमांत उपयोगिता ह्रास नियम तथा समसीमांत उपयोगिता नियम	23
5.	अनधिमान वक्र विश्लेषण	34
6.	उपभोक्ता माँग	48
7.	माँग की लोच	57

क्रम सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	उत्पादन के सिद्धान्त	
8.	उत्पादन फलन–I	64
9.	उत्पादन फलन–II	68
10.	पूर्ति का नियम एवं पूर्ति की लोच	78
11.	लागत सिद्धान्त तथा लागत वक्र	83
	कीमत का सिद्धान्त	
12.	संतुलन की संकल्पना तथा शर्तें	93
13.	पूर्ण प्रतियोगिता	98
14.	एकाधिकार	105
15.	एकाधिकारी प्रतियोगिता	113
16.	अल्पाधिकार	118
	आय का वितरण	
17.	वितरण का सिद्धान्त	125
18.	आय का वितरण-I : मजदूरी एवं ब्याज	133
19.	आय का वितरण-II : लगान एवं लाभ	148
20.	आय की असमानता	159

❐❐

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER
(June – 2019)

(Solved)

आर्थिक सिद्धांत

समय : 2 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 50*

(कुल का 70%)

नोट : *इस प्रश्न पत्र में* ***क, ख*** *तथा* ***ग*** *खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड में आवश्यक निर्देश दिए गए हैं।*

खण्ड–क

इस खण्ड में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न 1. आर्थिक प्रणाली के विभिन्न प्रकार क्या हैं? मिश्रित अर्थव्यवस्था की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ 15, प्रश्न 1, पृष्ठ 19, 'आदिकालीन समाज', पृष्ठ 20, 'सामंतवाद', 'पूँजीवाद', 'समाजवाद', पृष्ठ 17, प्रश्न 1 (बोध प्रश्न 4)

प्रश्न 2.चित्र की सहायता से उपभोक्ता अतिरेक की कल्पना की व्याख्या कीजिए। इसकी सीमाएँ क्या हैं?

उत्तर–उपभोक्ता अतिरेक (Consumer Surplus) से अभिप्राय है किसी मूल्य की वह अतिरिक्त राशि जिसे उपभोक्ता अपनी इच्छा से देने को तैयार होता है अर्थात उपभोक्ता अपनी जरूरत की चीजों को किसी भी कीमत पर खरीदता है, चाहे उसे उसके लिए थोड़ा ज्यादा मूल्य क्यों न चुकाना पड़े। उदाहरण के लिए नमक, अखबार और माचिस जैसी वस्तुएँ वे वस्तुएं हैं, जिनके लिए उपभोक्ता थोड़ी अधिक राशि देने के लिए भी आसानी से तैयार हो जाता है।

संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ 54-55, प्रश्न 8 व 10

प्रश्न 3. माँग की लोच से आप क्या समझते हैं? माँग की कीमत लोच का मापन आप किस प्रकार करेंगे?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ 60, प्रश्न 1, पृष्ठ 58, प्रश्न 2

प्रश्न 4. पूर्ण और अपूर्ण, दोनों प्रतियोगिताओं में फर्म की सीमांत आय और औसत आय की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ 103, प्रश्न 7, पृष्ठ 109, प्रश्न 5

खण्ड–ख

इस खण्ड में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्रश्न 5. दीर्घकालीन लागत वक्र क्या है? अल्पकालीन औसत लागत वक्र 'U'-आकृति का क्यों होता है? समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ 85, प्रश्न 1, पृष्ठ 90, प्रश्न 4

प्रश्न 6. 'नियत' और 'परिवर्ती आगतों के बीच अंतर बताइए। उत्पादन के सिद्धांत में इनका क्या महत्त्व है? समझाइए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ 64, प्रश्न 1 तथा 3

प्रश्न 7. 'एकाधिकार' शब्द का क्या अर्थ है? यह पूर्ण प्रतियोगिता से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ 106, प्रश्न 1 अध्याय-15, पृष्ठ 114, प्रश्न 1

प्रश्न 8. लाभ क्या हैं? इसके स्त्रोतों का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-19, पृष्ठ 149, प्रश्न 1, पृष्ठ 150, प्रश्न 2

खण्ड–ग

प्रश्न 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए–

(क) सामूहिक सौदाकारी

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ 134, प्रश्न 1

(ख) प्रतियोगी मजदूरी

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-18, पृष्ठ 133, प्रश्न 1 और 2

(ग) माँग का विस्तार (extension) और माँग की वृद्धि (Increase/shift))

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ 49, प्रश्न 2

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

(घ) उपयोगिता विश्लेषण की संख्यात्मक (cardinal) और क्रमिक (ordinal) विधि

उत्तर–मार्शल के उपयोगिता विश्लेषण एवं तटस्थता वक्र-विश्लेषण उपभोक्ता के व्यवहार से संबंधित है। ये दोनों विश्लेषण मूलत: एक-दूसरे से भिन्न हैं, फिर भी दोनों के बीच कुछ समानताएं पाई जाती हैं। मार्शल का विश्लेषण उपयोगिता की संख्यात्मक माप की अवधारणा पर आधारित है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह विश्लेषण इस मान्यता पर आधारित नहीं है कि उपभोक्ता उपयोगिता की संख्यात्मक माप कर सकता है। यह विश्लेषण इस मान्यता पर आधारित है कि उपभोक्ता दो वस्तुओं के विभिन्न संयोगों की सापेक्षिक उपयुक्तता को आंकता है। लेकिन तटस्थता वक्र-विश्लेषण उपयोगिता की क्रमागत माप की धारणा पर आधारित है। इसमें उपयोगिता की संख्यात्मक माप की आवश्यकता नहीं पड़ती। उपयोगिता की संख्यात्मक माप किए बिना तथा मुद्रा की सीमांत उपयोगिता को स्थिर माने बगैर उपभोक्ता की बचत की व्याख्या की जा सकती है। उपयोगिता विश्लेषण की संख्यात्मक विधि क्रमसूचक संख्या पर प्रदर्शन नहीं कर रही है, यह विभिन्न विकल्पों की उपयोगिता को मापने का एक प्रयास है, जब क्रमसूचक उपयोगिता के बारे में बात करते हैं, तो यह विकल्प की रैंकिंग है।

■■

Neeraj Publications
www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

आर्थिक सिद्धांत
(Economic Theory)

आर्थिक प्रणाली की मूल समस्याएँ तथा आधारभूत संकल्पनाएँ

1

आर्थिक प्रणालियों की मूलभूत समस्याएँ

परिचय

प्रत्येक अर्थव्यवस्था की कुछ मूलभूत समस्याएँ होती हैं, जैसे कि अर्थव्यवस्था में उपलब्ध सीमित साधनों का उपयोग करते हुए उत्पादकता कैसे बढ़ाई जाए? प्रस्तुत अध्याय में चर्चा की गई है कि आधारभूत समस्याएँ क्या होती हैं व उनके निदान क्या हैं?

बोध-प्रश्न 1

प्रश्न 1. आवश्यकता की दो महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ बताइए, जो उन्हें असीमित बनाती हैं।

उत्तर–आवश्यकताओं की दो महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ जो उन्हें असीमित बनाती हैं, वे हैं उनका स्थायी रूप से संतुष्ट न होना तथा उनका बार-बार नये-नये रूपों में जन्म लेना। उल्लेखनीय है कि आवश्यकताओं के स्थायी रूप से संतुष्ट न होने के कारण ये बार-बार पैदा हो जाती हैं तथा एक आवश्यकता की पूर्ति होने के बाद दूसरी आवश्यकता उत्पन्न हो जाती है अर्थात् दूसरी आवश्यकता पैदा हो जाती है। आवश्यकता की ये दो विशेषताएँ ही उसे असीमित बनाती हैं।

प्रश्न 2. आर्थिक प्रणाली से क्या तात्पर्य है?

उत्तर–आर्थिक प्रणाली एक व्यापक शब्द है। इसके अंतर्गत साधनों और आवश्यकताओं के मध्य असंतुलन की मूलभूत तथा स्थायी समस्या का समाधान करने के लिए गठित व्यवस्था आती है। इसमें प्रकृति-प्रदत्त संसाधनों के अतिरिक्त मानव-निर्मित साधन भी शामिल होते हैं। आर्थिक प्रणाली अपने में वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन, व्यापार, विनिमय, परिवहन और वितरण आदि के लिए की गई सभी व्यवस्थाओं को समाहित किए हुए होती है। आर्थिक प्रणाली में बैंकिंग, वित्तीय परिसंपत्तियाँ तथा बाजार जैसी संस्थाएँ आदि भी शामिल होती हैं।

प्रश्न 3. बताइए कि निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत–

(i) सभी मनुष्यों की आवश्यकताएँ असीमित होती हैं।

(ii) सब मनुष्यों की समान आवश्यकताएँ होती हैं।

(iii) किन्हीं आर्थिक प्रणालियों में सभी व्यक्तियों की सभी आवश्यकताएँ पूरी करनी संभव है।

(iv) किसी व्यक्ति की आवश्यकताएँ उसकी आय पर निर्भर करती हैं।

(v) किसी आवश्यकता की पूर्ति होने पर वह फिर पैदा हो जाती है।

(vi) आवश्यकताओं और उनकी तुष्टि करने के कई विकल्प हैं।

(vii) अधिकांश व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की तुष्टि के साधनों की उपलब्धता के अनुरूप कार्य करते हैं।

(viii) आर्थिक अभिकर्त्ता उन कमीशन एजेंटों की तरह है, जो अन्य लोगों को क्रय-विक्रय इत्यादि क्रियाकलापों में सहायता करते हैं।

उत्तर–*(i)* गलत, *(ii)* गलत, *(iii)* गलत, *(iv)* सही, *(v)* सही, *(vi)* सही, *(vii)* गलत, *(viii)* गलत।

www.neerajbooks.com

बोध-प्रश्न 2

प्रश्न 1. उत्पादन के कारक कौन-से हैं? नाम लिखिए।

उत्तर–उत्पादन के कारक हैं–*(i)* भूमि, *(ii)* श्रम, *(iii)* पूँजी, एवं *(iv)* उद्यम।

प्रश्न 2. बताइए कि निम्नलिखित कथन सही हैं अथवा गलत–

(i) उपयोगिता और तुष्टि एक ही चीज है।

(ii) उपयोगिता किसी वस्तु की माँग की तुष्टि करने की क्षमता है।

(iii) उत्पादन उपयोगिता का सृजन है।

(iv) किसी देश में भूमि की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है।

(v) उत्पादन के साधनों में बहुत-सी मदें हैं, जो कि कुल उत्पादन पर प्रभाव डाले बिना एक-दूसरे का प्रतिस्थापन कर सकती हैं।

उत्तर–*(i)* गलत, *(ii)* सही, *(iii)* सही, *(iv)* गलत, *(v)* सही।

प्रश्न 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(i) ..... और ..... उत्पादन के दो प्रमुख प्राथमिक कारक हैं।

(ii) ..... के लिए पूँजी उत्पादन का साधन है।

(iii) भूमि प्रकृति का बिना मूल्य का उपहार है, जबकि पूँजी ..... है।

उत्तर–*(i)* भूमि, श्रम *(ii)* और आगे उत्पादन, *(iii)* मानव-निर्मित।

बोध-प्रश्न 3

प्रश्न 1. पूँजी-निर्माण किसे कहते हैं?

उत्तर–पूँजी मानव-निर्मित अथवा उत्पादित उत्पादन का एक महत्त्वपूर्ण साधन है। पूँजी-निर्माण किसी भी अर्थव्यवस्था के बचाव अथवा संवर्द्धन के लिए एक महत्त्वपूर्ण और अत्यावश्यक प्रक्रिया है। प्रत्येक अर्थव्यवस्था उत्पादक संसाधनों की कमी की समस्या को दूर करने के लिए अपने राष्ट्रीय उत्पादन के अंश को वर्तमान उपभोग से बचाकर उसका प्रयोग पूँजी निर्माण या उत्पादक साधनों के स्टॉक को बढ़ाने में करती है। दूसरे शब्दों में, पूँजी-निर्माण राष्ट्रीय उत्पादन के उपभोग में कमी लाकर किया जाता है।

प्रश्न 2. उत्पादन की तकनीक क्या है?

उत्तर–किसी वस्तु के उत्पादन के लिए उत्पादन के सही साधनों का पता लगाना ही उत्पादन की तकनीक कहलाती है। उदाहरणस्वरूप, जब अर्थव्यवस्था किसी वस्तु के उत्पादन का निर्णय लेती है, तो इस बात का पता लगाना होता है कि उसके लिए कितने श्रम, कितनी पूँजी और कितनी भूमि आदि की आवश्यकता होगी। उत्पादन की तकनीक का चयन उत्पादन के साधनों की सापेक्ष उपलब्धता पर निर्भर करता है। उत्पादन की तकनीक के अंतर्गत श्रम-प्रधान तकनीक (Labour-intensive Technique) और पूँजी-प्रधान तकनीक (Capital-intensive Technique) आती हैं। श्रम-प्रधान तकनीक के तहत पूँजी की अपेक्षा श्रम को महत्ता प्रदान की जाती है, जबकि पूँजी-प्रधान तकनीक में श्रम की अपेक्षा पूँजी को महत्त्व दिया जाता है।

प्रश्न 3. सर्वहितकारी वस्तुएँ किन्हें कहा जाता है?

उत्तर–वे वस्तुएँ जिनका उपयोग समाज के लिए अत्यंत जरूरी है, सर्वहितकारी वस्तुएँ कहलाती हैं। सर्वहितकारी वस्तुओं की सबसे उल्लेखनीय विशेषता यह है कि इनका लाभ न केवल उसके प्रयोग करने वाले वर्ग होता है, अपितु अन्य लोगों को भी उसका लाभ मिलता है। उदाहरण के लिए, शिक्षा एक शिक्षित व्यक्ति से न केवल उस व्यक्ति को अपितु संपूर्ण समाज को फायदा मिलता है। सर्वहितकारी वस्तु से समाज के सभी लोगों को फायदा मिलता है तथा उनकी क्षमता एवं कल्याण में वृद्धि होती है।

प्रश्न 4. सार्वजनिक एवं निजी वस्तुओं में अंतर बताइए।

उत्तर–वे वस्तुएँ जिनका मूल्य इस तरह तय किया जाता है कि उनका उपयोग कुछ ही व्यक्तियों तक सीमित रह जाए है, निजी वस्तुएँ कहलाती हैं, जबकि सार्वजनिक वस्तुएँ वे होती हैं, जिनका उपयोग कुछ ही व्यक्तियों तक सीमित नहीं किया जा सकता। इसका उदाहरण है–सुरक्षा सेवा।

प्रश्न 5. बताइए कि निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत–

(i) उत्पादन संसाधनों का आबंटन सभी तरह की अर्थव्यवस्थाओं में एकसमान है।

(ii) किसी वस्तु के उत्पादन के लिए उपयोग में लाए जाने वाले उत्पादन के साधनों में सही अनुपात को उस मद के उत्पादन की तकनीक कहा जाता है।

(iii) सभी व्यक्तियों को निजी उत्पादन बिना मूल्य के उपलब्ध कराए जाते हैं।

(iv) ऐसी वस्तुएँ जिनकी उपलब्धता चुने हुए व्यक्तियों को ही प्रदान की जाती हैं, को सार्वजनिक कहा जाता है।

(v) सर्वहितकारी वस्तु का उपयोग केवल उन्हीं व्यक्तियों को लाभ पहुँचाता है, जो उनका सेवन करते हैं।

उत्तर–*(i)* गलत, *(ii)* सही, *(iii)* गलत, *(iv)* सही, *(v)* गलत।

बोध-प्रश्न 4

प्रश्न 1. उत्पादन संभावना वक्र से क्या तात्पर्य है?

उत्तर–उत्पादन संभावना वक्र वह वक्र है, जो दिए हुए संसाधनों तथा तकनीक द्वारा दो वस्तुओं के उत्पादन की वैकल्पिक संभावनाओं को प्रकट करता है।

लिप्सी के शब्दों में, "उत्पादन संभावना वक्र वह वक्र है, जो वस्तुओं के संभावित संयोगों को प्रकट करता है, जिनका दिए हुए उपलब्ध संसाधनों तथा तकनीक के अंतर्गत एक अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादन किया जा सकता है।"

(The production possibility curve is that curve which shows the possible combinations of two goods

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

that can be produced by an economy, given available resources and technology.)

प्रश्न 2. बताइए, निम्नलिखित कथन सही हैं या गलत–

(i) बाजार अर्थव्यवस्था में साधनों का आबंटन समाज की वास्तविक आवश्यकता के अनुरूप होता है।

(ii) आर्थिक विवेक के आधार पर लिए गए निर्णय समाज की दृष्टि से सदा श्रेष्ठ होते हैं।

(iii) किसी बाजार अर्थव्यवस्था के सम्बन्ध में निर्णय मूल्य-संकेतों से प्रभावित होता है।

(iv) समाजवादी अर्थव्यवस्था में केंद्रीय समस्याओं का समाधान बाजार-प्रक्रिया द्वारा किया जाता है।

(v) मिश्रित अर्थव्यवस्था में संसाधनों का आबंटन आंशिक रूप से निजी क्षेत्र द्वारा निर्धारित किया जाता है।

(vi) किसी मिश्रित अर्थव्यवस्था में प्राधिकारियों द्वारा निजी क्षेत्र को अनियमित छोड़ दिया जाता है।

उत्तर–*(i)* गलत, *(ii)* सही, *(iii)* गलत, *(iv)* सही, *(v)* गलत, *(vi)* गलत।

प्रश्न 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(i) बाजारतंत्र का अभिप्राय है ..... के बीच अंत:क्रिया।

(ii) आर्थिक ..... का भी अर्थ है कि आर्थिक इकाई अपने ही हितों के लिए कार्य कर रही है।

(iii) ..... अर्थव्यवस्था में सभी आर्थिक निर्णय आर्थिक विवेक के आधार पर लिए जाते हैं।

उत्तर–*(i)* माँग, पूर्ति तथा मूल्य, *(ii)* तर्काधार, *(iii)* बाजार/पूँजीवादी।

स्वपरख-अभ्यास-प्रश्न

प्रश्न 1. अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ क्या हैं? अलग-अलग अर्थव्यवस्थाओं में इन समस्याओं का समाधान कैसे सम्भव है?

उत्तर–प्रत्येक व्यवस्था को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है। यथा, दुर्लभ साधनों का कैसे प्रयोग किया जाए, यह निर्णय करना होता है, ताकि समाज में सदस्यों को अधिकतम संतुष्टि प्राप्त हो सके। यह समस्या केवल व्यक्ति विशेष के समक्ष ही उपस्थित नहीं होती, बल्कि प्रत्येक अर्थव्यवस्था के समक्ष सीमित साधनों के कुशलतम आबंटन की समस्या उपस्थित होती है। स्पष्ट है कि आवश्यकताओं की असीमितता एवं साधनों की दुर्लभता ही आर्थिक समस्याओं की जननी है। किसी व्यक्ति या देश के पास इतने साधन नहीं होते जिससे व्यक्ति या देश की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। लेकिन, साधनों का वैकल्पिक उपयोग किया जा सकता है। एक व्यक्ति को उपलब्ध साधनों के वैकल्पिक उपयोगों में से किसी एक उपयोग का चयन करना पड़ता है। क्योंकि आवश्यकताएँ तीव्रता में भिन्न होती हैं, इसलिए व्यक्ति उसी उपयोग में साधनों का प्रयोग करेगा, जिससे उसे अधिकतम संतुष्टि मिल सके। इसे 'चयन की समस्या' कहा जाता है। इसे 'मितव्ययिता की समस्या' या 'आर्थिक समस्या' भी कहा जाता है। जो बात किसी एक व्यक्ति के विषय में सत्य है, वह सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के बारे में भी सत्य है। प्रत्येक अर्थव्यवस्था चाहे वह सरल हो या जटिल, विकसित हो या अल्पविकसित, समाजवादी हो या पूँजीवादी, को आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ता है। प्रत्येक अर्थव्यवस्था को उपलब्ध सीमित संसाधनों के वैकल्पिक प्रयोगों के बीच चुनाव करना पड़ता है। अत: दुर्लभता ही केन्द्रीय समस्याओं की जननी है। दुर्लभता का तात्पर्य वांछित साधनों की अपर्याप्त मात्रा में उपलब्धि से है। संसाधनों की दुर्लभता के कारण अर्थव्यवस्था में छ: मुख्य समस्याएँ, जिन्हें केन्द्रीय समस्याएँ कहा जाता है, पैदा होती हैं, जिन्हें अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ कहा जाता है; जैसे

(1) क्या उत्पादन किया जाए?

(2) कैसे उत्पादन किया जाए?

(3) किसके लिए उत्पादन किया जाए?

(4) संसाधनों का कुशलतम प्रयोग कैसे किया जाए?

(5) किस प्रकार विकास किया जाए तथा राष्ट्रीय आय का कितना भाग निवेश किया जाए?

(6) आर्थिक विकास की दर को कैसे बढ़ाया जाए?

(1) क्या उत्पादन किया जाए? अर्थात् साधनों के आबंटन की समस्या–प्रत्येक अर्थव्यवस्था को सर्वप्रथम यह निर्णय करना होता है कि कौन-सी वस्तुओं का उत्पादन किया जाए और कितनी मात्रा में। यदि हमारे पास उत्पादन के साधन असीमित होते, तो हम वस्तुओं का जितनी मात्रा में चाहते, उत्पादन कर सकते थे और इसलिए यह प्रश्न उठता ही नहीं कि किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए और किनका नहीं। किन्तु चूंकि साधन वास्तव में मनुष्य की आवश्यकताओं की अपेक्षा कम मात्रा में उपलब्ध हैं, अत: अर्थव्यवस्था को वस्तुओं और सेवाओं में से चयन करना पड़ता है कि किन वस्तुओं का उत्पादन किया जाए और किनका नहीं। अत: समस्या यह है किन आवश्यकताओं की पूर्ति की जाए और किनकी नहीं?

(2) उत्पादन कैसे किया जाए, अर्थात् तकनीकों में चयन की समस्या–उत्पादन कैसे किया जाए का अर्थ है वस्तुओं का उत्पादन किस विधि से किया जाए। वस्तुओं का उत्पादन स्वचालित करघों, विद्युत करघों या हथकरघों से किया जा सकता है। इस प्रकार व्यक्ति को यह निर्णय करना होता है कि खेतों की सिंचाई कुओं द्वारा की जाए अथवा बड़ी नहरों द्वारा। इस प्रकार हथकरघे द्वारा उत्पादन 'श्रम-प्रधान तकनीक' कहलाती है। विद्युत करघे या स्वचालित करघे द्वारा कपड़े के उत्पादन में कम श्रम और अधिक पूंजी का प्रयोग किया जाता है। अत: इसे 'पूँजी-प्रधान तकनीक' कहते हैं। अत: अर्थव्यवस्था में इसका चयन करना होता है कि उत्पादन श्रम-प्रधान तकनीक द्वारा किया जाए अथवा

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

पूँजी-प्रधान तकनीक द्वारा। साधनों की दुलर्भता यह सुनिश्चित कर देती है कि वस्तुओं का उत्पादन अधिक कुशल ढंग से कैसे किया जाए। यदि साधनों का अकुशल ढंग से प्रयोग किया जाएगा, तो उत्पादन कम होगा।

(3) उत्पादन किसके लिए किया जाए? अर्थात् राष्ट्रीय उत्पादन के वितरण की समस्या–जब एक बार 'क्या' और 'कैसे' जैसी उत्पादन की समस्याएँ हल हो जाती हैं, तब वस्तुओं का उत्पादन प्रारम्भ किया जाता है। अब यह आर्थिक निर्णय लेना होता है कि 'उत्पादन किसके लिए किया जाए?' अर्थात् समाज के सदस्यों के बीच राष्ट्रीय उत्पादन का वितरण कैसे किया जाए? राष्ट्रीय उत्पादन का वितरण राष्ट्रीय आय के वितरण पर निर्भर करता है। जिसकी आय अधिक होगी, वह राष्ट्रीय उत्पादन का अधिक हिस्सा प्राप्त करेगा और जिसकी आय कम होगी, वह राष्ट्रीय आय का कम हिस्सा प्राप्त करेगा। अत: राष्ट्रीय आय का विभाजन जितना विषम होगा, राष्ट्रीय उत्पादन उतना ही विषम रूप से विभाजित होगा और राष्ट्रीय आय का वितरण जितना समान होगा, राष्ट्रीय उत्पादन का वितरण उतना ही समान होगा।

(4) संसाधनों का कुशलतम प्रयोग कैसे किया जाए? उत्पादन के विभिन्न साधनों को उत्पादन की विभिन्न क्रियाओं तथा विभिन्न व्यवसायों में किस प्रकार लगाया जाए, यह प्रत्येक अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्या होती है। दूसरे शब्दों में, साधनों का इस प्रकार संयोजन किया जाए कि अधिकतम उत्पादन प्राप्त हो सके।

(5) उत्पादन और वितरण को कैसे कुशल बनाया जाए? कुशलता का अर्थ है संसाधनों का उनके सर्वोत्तम उपयोग में प्रयोग किया जाना।

(6) आर्थिक विकास की गति कैसे बढ़ायी जाए? आर्थिक विकास की दर बढ़ाने के लिए नए संसाधनों का विकास, पूँजी-निर्माण की दर, निवेश के स्तर, नई तकनीकों का प्रयोग आवश्यक है। कुछ अर्थशास्त्रियों के अनुसार जब तक सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन नहीं किए जाते, उत्पादन के तरीके, साधनों का स्वामित्व, उत्पादन-सम्बन्धों आदि में परिवर्तन नहीं किए जाते, तब तक आर्थिक विकास की गति को बढ़ाना सम्भव नहीं होगा।

प्रश्न 2. उत्पादन सम्भावना वक्र से आप क्या समझते हैं? इसकी मान्यताओं एवं उपयोगिता की व्याख्या करें।

उत्तर–आर्थिक समस्या को स्पष्ट करने के लिए आधुनिक अर्थशास्त्री उत्पादन सम्भावना वक्र का प्रयोग करते हैं। जैसा कि स्पष्ट है प्रत्येक अर्थव्यवस्था को साधनों के वैकल्पिक उपयोगों के बीच चयन करना पड़ता है। इसे इस उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है कि एक अर्थव्यवस्था में उपलब्ध साधनों के द्वारा केवल दो वस्तुओं–वस्त्र तथा मशीनों–का उत्पादन होता है। यह अर्थव्यवस्था अपने समस्त संसाधनों का प्रयोग वस्त्र के उत्पादन में करती है, तो वह मशीनों का बिल्कुल भी उत्पादन नहीं कर सकेगी। इसी प्रकार यदि समस्त साधनों का उपयोग मशीनों के उत्पादन हेतु किया जाता है, तो वस्त्र का उत्पादन बिल्कुल नहीं होगा। तीसरी संभावना यह हो सकती है कि अर्थव्यवस्था कुछ साधनों का वस्त्र के उत्पादन में प्रयोग करे तथा शेष साधनों का प्रयोग मशीनों के निर्माण में करे। उत्पादन की विभिन्न संभावनाओं को नीचे दी गई सारणी में प्रदर्शित किया गया है–

वस्त्र और मशीनों की उत्पादन सम्भावनाएँ

संभावना	वस्त्र (लाख मीटर)		मशीन (हजार)
पहली	0	+	20
दूसरी	1	+	18
तीसरी	2	+	15
चौथी	3	+	11
पाँचवीं	4	+	6
छठी	5	+	0

तालिका से स्पष्ट है कि अर्थव्यवस्था अधिक-से-अधिक 20 हजार मशीनों का उत्पादन कर सकती है। अगर वस्त्र का उत्पादन शून्य हो अथवा 5 लाख, मीटर वस्त्र का उत्पादन कर सकती है, अगर मशीनों का उत्पादन शून्य (Nil) हो। इन दो चरम सीमाओं के अतिरिक्त उत्पादन की अन्य संभावनाएँ भी हैं, जैसे–1 लाख मीटर वस्त्र और 18 हजार मशीनें अथवा 3 लाख मीटर वस्त्र और 11 हजार मशीनें, अथवा 4 लाख मीटर वस्त्र और 6 हजार

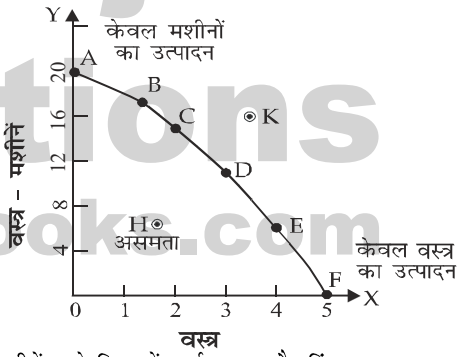

मशीनें। इसे चित्र में दर्शाया गया है। बिंदु प्रथम सम्भावना को प्रकट करता है, जिसमें केवल मशीनों का ही उत्पादन होता है। बिंदु F दूसरी चरम सीमा सभावना को प्रकट करता है जब केवल वस्त्र का ही उत्पादन होता है। इनके बीच में स्थित B, C, D तथा E दोनों वस्तुओं के उत्पादन की अन्य संभावना को प्रकट करते हैं। बिन्दु A, B, C, D, E तथा F को एक वक्र की सहायता से जोड़ने पर अर्थव्यवस्था का उत्पादन संभावना वक्र प्राप्त होता है। इसे 'उत्पादन संभावना सीमा' भी कहा जाता है। उत्पादन संभावना वक्र या उत्पादन संभावना सीमा दो वस्तुओं के उत्पादन की अन्य संभावना को प्रकट करते हैं, जिसका उत्पादन साधनों की एक निश्चित मात्रा की सहायता से किया जा सकता है। **प्रो. सेम्युलसन** के अनुसार, "एक पूर्ण रोजगार अर्थव्यवस्था एक वस्तु का उत्पादन करते हुए सदैव किसी अन्य वस्तु की मात्रा का त्याग करती है। ऐसी पूर्ण रोजगार अर्थव्यवस्था में प्रतिस्थापन जीवन का नियम है।"

www.neerajbooks.com